अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

# प्राचीन भारतीय साहित्य तथा लोक जीवन में अप्सरा

**बृजेन्द्र कुमार त्रिपाठी**

शोध–छात्र, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

भारतीय धर्म और कला में लोक जीवन को अत्यन्त महत्व प्रदान किया गया है। विभिन्न धार्मिक आस्थाओं में जहाँ एक ओर प्रमुख देवों को मान्यता दी गयी है, वहीं दूसरी ओर इन अधिदेवों को भी मान्यता दी गयी है जो मुख्यतः धर्म के लौकिक पक्ष से जुड़े हैं। इन लौकिक देवताओं में यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा, किन्नर, विद्याधर, नाग एवं सर्प आदि महत्वपूर्ण रहें हैं, जिन्हें अधिदेवता के रूप में समाज ने स्वीकार किया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् गृहसुत्र, पुराण, जातक, पालि, निकाय, जैन आगम साहित्य, संस्कृत–काव्य–कथा ग्रंथ आदि अनेक ग्रन्थों में इन अर्द्धदेवों की उपासना एवं पूजा पद्धति का उल्लेख मिलता है। साथ ही कला में भी इनकी प्रतिमाओं का शिल्पांकन कर इन्हें लोक संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

अप्सरा एक प्रकार की परी है ऋग्वेद में अप्सराओं को समुद्र से सम्बन्धित बताया गया है। इस वेद में अप्सराओं के विषय में मिलने वाले संकेत अत्यल्प हैं, क्योंकि अप्सरा नाम ऋग्वेद में केवल पांच बार आया है। यजुर्वेद[1] और अथर्ववेद[2] में भी अप्सराओं का निवास स्थान समुद्र बताया गया है। महाभारत के अनुसार अप्सराएं इन्द्र की वरदानी सेविकाएं[3], देवारण्य विहारिणी[4], देवपुत्रियाँ[5] अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण तथा दिव्यमालाऐं धारण करती थी।[6] अपने केशों को ऊपर कर पांच भागों में विभक्त कर बांधती थी।[7] शतपथ ब्राह्मण[8] में अप्सराओं को हंसिनी के रूप में प्रदर्शित किया गया है जो पानी पर तैरती रहती हैं। कौषीतकी ब्राह्मण[9] में अप्सराओं को नीले व सफेद कमलों के सुगंधित कुंज में तैरते हुए दिखाया गया है। भगवद्गीता[10] के अनुसार अप्सराऐं समुद्र मन्थन के समय समुद्र से प्रकट हुई थीं। वे सुन्दर वस्त्र तथा गले में स्वर्णहार पहनती थी। शरीर आभूषणों से सुसज्जित रहता था। उनकी चाल व चितवन सुन्दर थी। विष्णुधर्मोत्तर पुराण[11] में अप्सराओं को श्वेतवर्ण वाली सुन्दरी कहकर इनके लिए 'देवयोषा' शब्द का सम्बोधन प्रयुक्त हुआ है। शिल्परत्न[12] में अप्सराओं को रेशमीवस्त्र पहने हुए पीन पयोधरों तथा जघनस्थली, पतले कटि प्रदेश एवं मधुरहास्य से युक्त तथा सुन्दर कटाक्षवाली कहा गया है।

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अथर्ववेद में गन्धर्वों के साथ अप्सराओं का भी वर्णन हुआ है।[13] सोम को इनका राजा बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में इन्हे हंसिनी के रूप में प्रदर्शित किया गया है, जो पानी पर तैरती रहती हैं, रामायण में कहा गया है कि अप्सराएँ देवों के प्रत्येक प्रसन्नता के अवसर पर गन्धर्वों के साथ नृत्यादि करती हैं। प्रत्येक कार्य में देवों की सहायता करती हैं। वे अपने नृत्य तथा सौन्दर्य से तपस्वियों की तपस्या भंग कर इन्द्र की रक्षा करती हैं। उर्वशी इन्द्र की सभा की सुन्दरी, सर्वश्रेष्ठ अप्सरा थी। नाच–गाकर इन्द्र को प्रसन्न करना उसका कार्य था। पुराणों में सहजन्या, विश्वाची, उर्वशी तथा तिलोत्तमा आदि के नामों के प्रसंग प्राप्त होते हैं। ये अप्सराएं समुद्रमंथन के समय समुद्र से प्रकट हुई थीं। ये बड़ी सुन्दर होती हैं। वे सुन्दर वस्त्रों से सुसाज्जित तथा गले में स्वर्ण हार पहनें थीं। शरीर आभूषणों से सुसज्जित था। उनकी चाल तथा चितवन सुन्दर थी –

ततश्चाप्सरसों जातानिष्ककण्ठ्य सुवाससः।
रमण्यः स्वर्गिणां वल्गुगतिलीलावलोकनैः।।

अप्सराएं स्वर्ग की नर्तकियां हैं। अपने नृत्य से देवो को रिछाना इनका प्रमुख कार्य है। इनका सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं रहता और न इनका कोई पति ही होता है। इनका सम्बन्ध गन्धर्वों के साथ अधिक रहता है। इसके अतिरिक्त पृथ्वी के वीरों के साथ भी इनका सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, जब वे स्वर्ग प्राप्त करते है। सायण का मत है कि अप्सराएँ दैवी जाति की स्त्रियाँ हैं। चित्ररथ इनके भी स्वामी हैं। अप्सराओं की संख्या सात कही गयी हैं, जिसमें–उर्वशी, रम्भा, विपुला तथा तिलोत्तमा का नाम प्रमुख है।[14]

अप्सराएं अत्यन्त पवित्र मानी जाती थी। अप्सराओं को अंतरिक्ष का वासी कहा गया है।[15] बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी में अप्सराओं के निवास, उनके परिवार व गन्धर्वों के साथ उनके सम्बन्ध, इन सभी का विवरण है। इसमें चौदह अप्सरा परिवारों का विवरण मिलता है। इनमें से कुछ का निवास स्थान समुद्र था जो कि समुद्र मन्थन के समय प्रकट हुई थी। कुछ अप्सराएं पृथ्वी पर वास करती थी, कुछ हिमालय पर्वत पर वास करती थी, और कुछ का सम्बन्ध स्वर्ग से था जो कि सूर्य, चन्द्रमा और वायु से सम्बन्धित थी। इस प्रकार इनका निवास स्थान ईरान, अरब सागर से लेकर पंजाब–कश्मीर तक सीमित था।

भगवद्गीता में ऐसा प्रसंग आया है कि मार्कण्डेय ऋषि का तप भंग करने के लिए पुंजिकस्थला नाम की अप्सरा आयी, वह अत्यन्त सुन्दरी थी। ध्यानावस्थित ऋषि के समक्ष आकर वह गेंद खेलने लगी। उसकी चोटी में पुष्प एवं मालाएं गुंथी हुई थी जिससे पुष्प गिर–गिर कर

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

पृथ्वी पर फैल रहे थे। उसकी दृष्टि मोहक थी। कभी–कभी वह तिरछी चितवन से इधर–उधर देख लेती थी। कभी–गेंद के साथ उसके नेत्र आकाश के ओर उठ जाते, कभी धरती की ओर आ जाते, कभी नेत्र हथेली की गेंद पर स्थिर हो जाते थे; वह बड़े हाव–भाव प्रदर्शित करती हुई गेंद की ओर दौड़ रही थी। कटि में सुन्दर करधनी थी और वह अत्यन्त महीन रेशमी साड़ी पहने थी जो वायु के झोंके के साथ हिल रही थी। इसके अतिरिक्त जो अप्सराएँ उसके साथ थी, वे हाव–भाव प्रदर्शित करती हुई नृत्य कर रही थी।[16]

पुराणों में अप्सराओं का विवरण प्राप्त होता है। विष्णुपुराण[17] में अप्सराओं की एक लम्बी सूची उनके पतियों (गन्धर्वो) के साथ दी गयी है। इसमें इनको नृत्य करते और वाद्ययंत्र बजाने में पारंगद बताया गया है। ये नृत्य करके, वाद्य बजाकर देवताओं का मनोरंजन करती थी। इस पुराण में इन्हें सूर्य देवता की अनुचरी के रूप में दिखाया गया है। वर्ष के प्रत्येक माह अलग–अलग अप्सराएं अपने पतियों (गन्धर्वों) के साथ सूर्य की अनुचरी और अनुचर का कार्य करती थी। साल के बाहर महीनों के लिए बारह अप्सरायें व बारह गन्धर्व नियत थे। इनके नाम सूची में इस प्रकार हैं – कृतुष्ठात, पुंजीकस्थला, मेनका, रम्भा या सहजन्या, प्रमलोया, अनुमलोपा, मृताची, विश्वाची, उर्वशी, पूर्वचिष्ठा, तिलोत्तमा एवं रम्भा। उनके पतियों (गन्धर्वों) की सूची इस प्रकार हैं, तुम्बुरू, नारद, हाहा, हूहू, विश्वासु, उग्रसेन, सुरूचि, विश्वासु, चित्रसेन, उरनयू, धृतराष्ट्र और सूर्यवर्चा। मत्स्य पुराण[18] में अप्सराओं को गन्धर्वों के साथ हाथों में पुष्प लिये उड़ते हुए दिखाया गया है।[19] स्कन्द पुराण[20] में अप्सराओं की तुलना नाग कन्याओं से की गयी है तथा इनको अतिसुन्दर बताया गया है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण इन्हें श्वेत वर्ण वाली सुन्दरी कह कर इनके लिए देवयोषा शब्द का सम्बोधन करता है –

आवाहयिष्यामि तथैवाप्सरसः शुभाः।
समायान्तु महाभागा देवयोषा समोज्जवलाः।।

ये सभी इन्द्र की सेवा में रहती हैं। इन्द्र की आज्ञा से वे पृथ्वी पर ऋषियों का तप भंग करने के लिए आती हैं। भगवान ने स्वयं कहा है कि वे गन्धर्वों में विश्वासु और अप्सराओं में ब्रह्माजी के दरबार की अप्सरा पूर्वचित्ति प्रसिद्धि हैं। शिल्परत्न ग्रन्थ में अप्सराओं को रेशमी वस्त्र पहले हुए पीन पयोधरा तथा मोटे जघनस्थल, पतला कटि प्रदेश, किंचित् मधुर हास्ययुक्त तथा सुन्दर कटाक्ष वाली कहा गया हैं।

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अप्सराओं की प्रतिमाऐं तो प्रतिमा कला की प्राण हैं। पत्थरों पर उत्कीर्ण अप्सराओं की प्रतिमाऐं यत्र–तत्र, सर्वत्र दिखायी देती हैं। भरहुत के अवशेष में कामदेव की मृत्यु के बाद देवों द्वारा आनन्द मनाए जाने का चित्र प्रदर्शित किया गया है। इसमें मिश्रकेशी, अलम्बुषा, सुभद्रा तथा पद्मावती आदि अप्सराएँ नृत्य कर रही हैं। इनकी मुखमुद्रा तथा भाव–भंगिमा बड़ी सुन्दर है।[21] खजुराहों के कन्दरिया महादेव मंदिर में आँख बन्द किये हुए तथा शान्त मुद्रा में खड़ी हुई दो अप्सराओं की प्रतिमाऐं हैं। पहली प्रतिमा में अप्सरा के केश किसी वस्तु से ढ़के हैं। शरीर पर मोतियों के आभूषण हैं। दूसरी प्रतिमा खड़ी है। कटि में पड़ी मेखला की लड़े घुटनों से नीचे तक लटक रही हैं।[22]

लक्ष्मण मन्दिर की दक्षिणी वाह्य भित्ति पर उत्कीर्ण अप्सरा की प्रतिमा खड़ी सुन्दर है। शरीर पर बहुत आभूषण हैं। कण्ठ मुक्ताहारों से भरा है। कटि मेखला की अनेक लड़े हैं। अप्सरा अपना दाहिना हाथ–सिर के पीछे किए हैं और उसका बाँया हाथ दाहिने वक्षस्थल के समीप है।[23] लक्ष्मण मन्दिर की वाह्य पश्चिमी भित्ति पर जृम्भणभाव में संलग्न एक अप्सरा की प्रतिमा उत्कीर्ण है। इसके दोनों हाथ ऊपर की ओर आधे उठे हैं। शरीर अंगड़ाई के कारण तिरछा है। चित्रण बड़ा स्वाभाविक है।[24] आदिनाथ मन्दिर में एक नृत्य करती हुई अप्सरा का[25] पार्श्वनाथ मन्दिर में एक नेत्र में अंजन लगाती हुई।[26] एक पैर से काँटा निकालती हुई अप्सरा का प्रदर्शन है।[27] सभी प्रतिमाऐं बड़ी स्वाभाविक हैं। अप्सराऐं सदैव नृत्य वाद्य के आनन्द में ही संलग्न रहती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– यजुर्वेद – 4.3.13

2– अथर्ववेद – 8.87.5

3– महाभारत वन पर्व – 43.32

4– महाभारत आदि पर्व – 216.15

5– महाभारत आदि पर्व – 130.6

6– महाभारत आदि पर्व – 133.53

7– महाभारत वन पर्व – 134.12

8–शतपथ ब्राह्मण – 11.5.74

9–कौषीतकीय ब्राह्मण – 11.3

Volume 8, Issue2, (April-June 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

10–भगवतगीता – 12.8.24

11–विष्णु पुराण – 4.4.66

12–शिल्प रत्न – 45.15

13–अथर्ववेद – 2.2.2

14–विष्णु पुराण – 11.10

15–श्रीमद्भगवत – 8.8.7

16– श्रीमद्भगवत – 6.13.28

17– विष्णु पुराण –4.4.68

18– मत्स्य पुराण – 9

19– मत्स्य पुराण – 9

20– स्कन्द पुराण – 4

21– बनर्जी जे0एन0 – डे0 हि0 हा0 पृ0सं0 353–54

22–खजुराहो पृ0 प्लेट – 8–9

23–खजुराहो पृ0 प्लेट – 39

24––खजुराहो पृ0 प्लेट – 55

25–खजुराहो पृ0 प्लेट – 52

26––खजुराहो पृ0 प्लेट– 35

27–खजुराहो पृ0 प्लेट – 50